# पाठ 4. एलबम

## पाठ का उद्देश्य

जीवन में कुछ उपकार अथवा ऋण ऐसे होते हैं, जिनका कोई मोल नहीं होता; जो अनमोल होते हैं। इस पाठ का उद्देश्य बच्चों को यह समझाना है कि यदि कोई किसी पर उपकार करे या उसकी सहायता करे तो व्यक्ति को उसके प्रति कृतज्ञता का भाव रखना चाहिए क्योंकि यह कृतज्ञता का भाव ही उसके प्रति आभार को प्रकट करता है।

## पाठ का सारांश

पंडित शादीराम ने लाला सदानंद से ऋण लिया था, पर वे उस ऋण को उतारने में असमर्थ नज़र आ रहे थे। एक बार पंडित जी के घर में पुरानी पत्रिकाओं को देखकर लाला जी उन्हें पत्रिकाओं के चित्रों का एक एलबम बनाने का सुझाव देते हैं। लाला सदानंद समाचारपत्रों में विज्ञापन दे देते हैं। लाला सदानंद कोलकाता के मारवाड़ी सेठ के नाम पर स्वयं वह एलबम एक हज़ार रुपये में खरीद लेते हैं। रुपये मिलने पर पंडित जी लाला सदानंद का ऋण उतार देते हैं। कुछ महीने गुज़र जाने के बाद अचानक लाला जी बीमार पड़ जाते हैं। पंडित जी लाला सदानंद को गीता सुना रहे होते हैं। एकाएक लाला जी की तबीयत बिगड़ जाती है। लाला जी की देखभाल करते समय पंडित जी को उनके सिरहाने के नीचे वही एलबम नज़र आता है। वास्तविकता पता चलने पर पंडित जी बड़े हैरान होते हैं। वे जान चुके थे कि उनका ऋण उतरा नहीं है अपितु दोगुना हो गया है। यह ऋण था उस उपकार का, उस अपनेपन का जिसे चाहकर भी पंडित जी कभी नहीं उतार सकते थे।

## अध्यापन संकेत

पाठ का आदर्श वाचन करें अथवा बच्चों से एक-एक अंश पढ़वाएँ। पाठ की महत्वपूर्ण पंक्तियों या अनुच्छेदों का सरलीकरण करें। पाठ में निहित जीवन-मूल्यों को बच्चों के अंदर ढूँढ़ने का प्रयास करें। इसके लिए बच्चों से कुछ प्रश्न पूछे जा सकते हैं, जैसे – यदि कोई वस्तु तुम्हें बहुत प्रिय हो परंतु वह वस्तु किसी अन्य व्यक्ति की आवश्यकता हो तो तुम क्या करोगे? क्या वह वस्तु उसे दे दोगे अथवा अपने बारे में सोचोगे!

**पाठ से संबंधित कुछ विशेष बातों पर बच्चों से विचार-विमर्श करें –**

- क्या उपकार का बदला उपकार द्वारा चुकाकर हम उस व्यक्ति के आभार से मुक्त हो जाते हैं अथवा उस उपकार का महत्व जीवन भर बना रहता है?
- क्या किसी की सहायता करके मन में संतोष एवं खुशी का भाव उत्पन्न होता है?

डिजीडिस्क (DigiDisc) के माध्यम से पाठ की ई-बुक विद्यार्थियों को दिखाकर पाठ के प्रत्येक अंग का स्पष्टीकरण कीजिए। गतिविधियों की दुनिया से परिचय भी कराइए।